



उत्तर प्रदेश: सामान्य अध्ययन

U.P. SPECIAL

लेखक

RWA TEAM

प्रकाशक:

Rojgar Publication
(A Unit of Rojgar Coaching Center)

(प्रकाशक एवं वितरक)

Bilaspur, Greater Noida
Gautam Budh Nagar
UP. 203202
Email: rojgarwithankit@gmail.com
Mobile : 9818489147

ISBN – 978-81-965448-9-8

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

भारतीय कॉपीराइट के अंतर्गत इस पुस्तक में समाहित समस्त सामग्री (टाईटल-डिजाइन, अन्दर का मैटर आदि) के सर्वाधिकार 'Rojgar Publication' के पास सुरक्षित हैं, इसके लिए कोई व्यक्ति/संस्था/समूह इस पुस्तक की पाठ्य सामग्री को आंशिक या पूर्ण रूप से तोड़-मरोड़कर या किसी अन्य भाषा में प्रकाशित नहीं कर सकता। उल्लंघन करने वाले कानूनी तौर पर हर्जे-खर्चे व हानि के जिम्मेदार स्वयं होंगे। न्यायिक क्षेत्र ग्रेटर नोएडा होगा।

Distributor :

Rohit General Store
Bilaspur, Greater Noida
Mobile : 9557571762, 7617661740

प्रस्तावना

प्रिय बालकों/बालिकाओं

जैसा कि आप सभी को विदित है कि उत्तर प्रदेश की लगभग सभी परीक्षाओं में उत्तर प्रदेश (U.P. Special) का अपना विशेष महत्व होता है। UPPSC, UPSSSC तथा अन्य UP की परीक्षाओं में U.P. Special (सामान्य अध्ययन) के महत्व को नकारा नहीं जा सकता। परीक्षा में सिलेक्शन के लिए सरल व सारगर्भित कंटेंट यदि सरल व सुगम भाषा में उपलब्ध हो, तो यह भाग निश्चित रूप में हमारे चयन में सहायक सिद्ध होगा।

हमारी RWA की बुक टीम ने इतने विस्तृत कंटेंट को एक संक्षिप्त बुक में समाहित करने का ईमानदार प्रयास किया है। इस पुस्तक में मानचित्र (Map) के माध्यम से कंटेंट को व्यवस्थित किया गया है। पुस्तक को कई स्तरों पर तथा अति सूक्ष्मता से जाँचा गया है, लेकिन फिर भी यह दावा करना कि पुस्तक त्रुटिरहित है, अव्यावहारिक ही होगा। पुस्तक में अपने महत्वपूर्ण सुझाव के लिए आप हमें 9818489147 पर Whatsapp कर सकते हैं। हम निश्चित रूप से आपके सुझावों को पुस्तक की गुणवत्ता में सुधार हेतु सम्मिलित करेंगे। पुस्तक में सभी अध्यायों के अंत में गत वर्ष में पूछे गए प्रश्नों को सम्मिलित किया गया है।

पंक्ति में खड़े अंतिम विद्यार्थी तक शिक्षा की पहुँच सुनिश्चित हो सके, इसी सपने के साथ यह सफर शुरू किया था, आज भी हम इसके लिए शत प्रतिशत प्रतिबद्ध हैं।

“खुद से हार जाऊँ वो अलग बात है,
वरना झुकने वाला इंसान नहीं हूँ मैं,
मुसीबतों से कह दो दिशा बदल लें,
क्योंकि रुकने वाला इंसान नहीं हूँ मैं”

शुभकामनाओं सहित
अंकित भाटी
(Rojgar with Ankit)

विषय-सूची

□	उत्तर प्रदेश: एक संक्षिप्त परिचय	5-18
1.	उत्तर प्रदेश: भौगोलिक अवस्थिति; मृदा, कृषि एवं पशुपालन	19-26
2.	उत्तर प्रदेश: नदियाँ/नहरें/झीलें/ताल एवं बहुउद्देशीय परियोजनाएँ	27-35
3.	उत्तर प्रदेश: वन, वनस्पति एवं वन्य जीव	36-41
4.	उत्तर प्रदेश: खनिज संसाधन	42-45
5.	उत्तर प्रदेश: ऊर्जा संसाधन	46-49
6.	उत्तर प्रदेश: उद्योग	50-57
7.	उत्तर प्रदेश: परिवहन एवं संचार	58-63
8.	उत्तर प्रदेश: जनगणना	64-70
9.	उत्तर प्रदेश: जनजातियाँ	71-76
10.	उत्तर प्रदेश: राजनीतिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था	77-90
11.	उत्तर प्रदेश का इतिहास	91-104
12.	उत्तर प्रदेश की कला एवं संस्कृति	105-118
13.	उत्तर प्रदेश के प्रमुख व्यक्तित्व	119-128
14.	उत्तर प्रदेश: भाषा, बोलियाँ एवं शिक्षा प्रणाली	129-138
15.	उत्तर प्रदेश: पर्यटन एवं पर्यटन स्थल	139-145
16.	उत्तर प्रदेश: प्रमुख शोध संस्थान, पार्क एवं स्मार्ट सिटी	146-155
17.	उत्तर प्रदेश की प्रमुख योजनाएँ एवं नीतियाँ	156-160

उत्तर प्रदेश: एक संक्षिप्त परिचय

उत्तर प्रदेश का जिलेवार मानचित्र



उत्तर प्रदेश का राजनैतिक मानचित्र



- उत्तर प्रदेश भारत का एक उत्तरी सीमांत राज्य है। यह $23^{\circ}52'$ उत्तरी अक्षांश से $30^{\circ}28'$ उत्तरी अक्षांश के मध्य तथा $77^{\circ}30'$ पूर्वी देशान्तर से $84^{\circ}39'$ पूर्वी देशान्तर के मध्य विस्तृत है।

- ❑ उत्तर प्रदेश राज्य की पूर्व से पश्चिम की लंबाई 650 किमी.. और उत्तर से दक्षिण तक की चौड़ाई 240 किमी.. है।
- ❑ उत्तर प्रदेश के उत्तर में उत्तराखंड एवं हिमाचल प्रदेश, पश्चिम में हरियाणा, राजस्थान एवं केंद्रशासित प्रदेश दिल्ली, दक्षिण में मध्य प्रदेश एवं छत्तीसगढ़ तथा पूर्व में बिहार एवं झारखण्ड राज्य अवस्थित हैं।
- ❑ लखीमपुर खीरी, पीलीभीत, बहराइच, श्रावस्ती, बलरामपुर, सिद्धार्थ नगर, महाराजगंज (कुल 7 जिलें) नेपाल के साथ अंतर्राष्ट्रीय सीमा साझा करते हैं।
- ❑ गाजियाबाद, मेरठ, हापुड़, गौतमबुद्ध नगर, बुलंदशहर, मुजफ्फरनगर, शामली और बागपत उत्तर प्रदेश के ऐसे 8 जिले हैं, जिन्हें राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (NCR) में शामिल किया गया है।

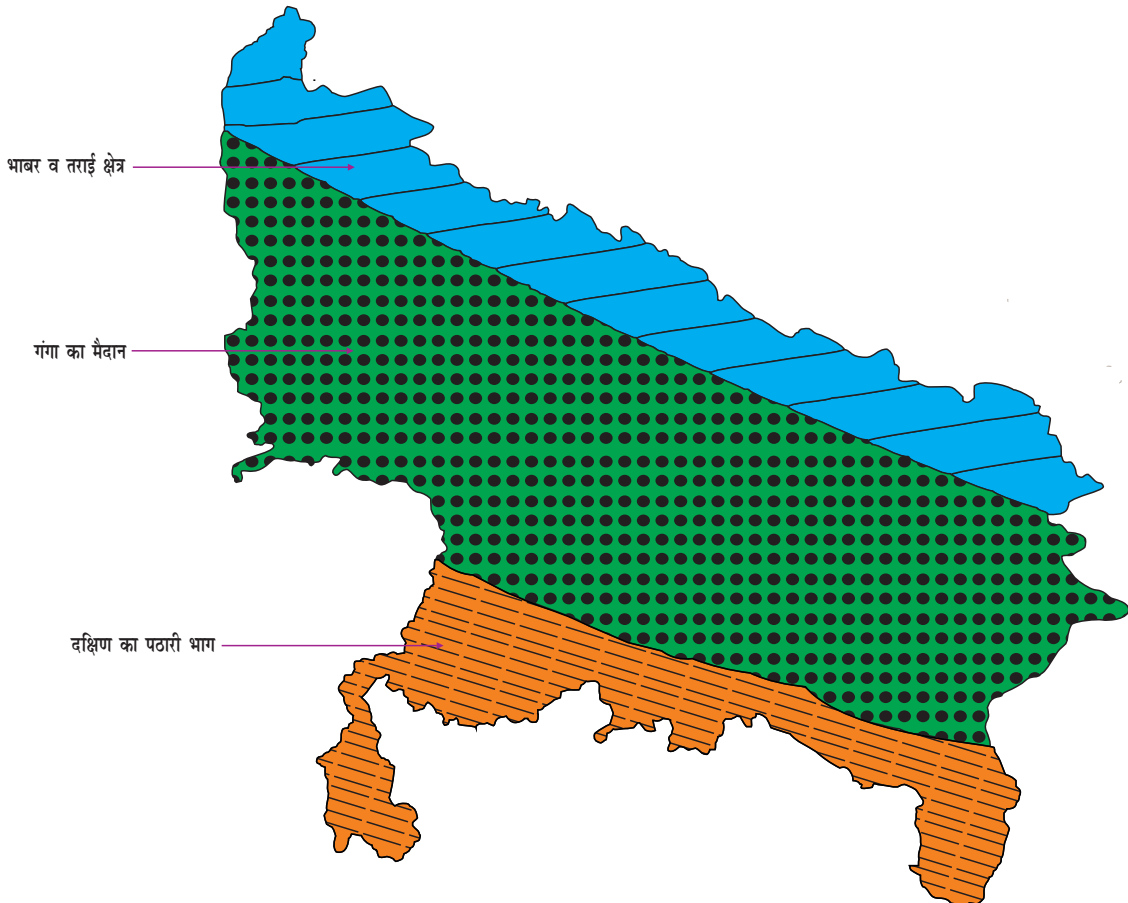
मृदा, कृषि तथा पशुपालन

मिट्टी के अध्ययन को पेडालॉजी (मृदा विज्ञान) कहते हैं। मृदा या मिट्टी का निर्माण मूल चट्टानों के अपक्षय या विघटन से होता है। अपक्षय के फलस्वरूप मिट्टी की चट्टानें छोटे कणों में टूटती है जिन्हें रेगोलिथ कहा जाता है।

वैज्ञानिक विश्लेषण के आधार पर उत्तर प्रदेश की मिट्टी को तीन भागों में बाँटा जा सकता है:

- ◆ भाबर एवं तराई क्षेत्रफल की मृदाएं
- ◆ मध्य के मैदानी क्षेत्रफल की मृदाएं
- ◆ दक्षिण के पठारी क्षेत्र की मृदाएं

उत्तर प्रदेश का भौगोलिक मानचित्र



भाबर एवं तराई क्षेत्र की मृदाएं:

- ◆ प्रदेश के उत्तरी भू-भाग अर्थात भाबर क्षेत्र में बह रही हिमालयी नदियों के भारी निक्षेपों से निर्मित होने के कारण इस क्षेत्र की मिट्टी में मोटा बालू तथा अधिक कंकड़-पत्थर होते हैं। इसलिए मिट्टी में जल छनकर

नीचे चला जाता है। जल के न ठहरने के कारण यहाँ कृषि करना असंभव है।

- ◆ जबकि भाबर के दक्षिण में तराई क्षेत्र में मृदा समतल, नम, दलदली तथा ऊपजाऊ है। यहाँ धान अथवा गन्ने की खेती की जा सकती है।

मध्य के मैदानी क्षेत्र की मृदाएं:

- ◆ **खादर या कछारी मृदा (नवीन जलोढ़ मिट्टी):** जो मृदा हर बार नदियों में आने वाली बाढ़ के साथ परिवर्तित होती है उसे खादर या कछारी मृदा कहते हैं। इस मृदा का रंग हल्का भूरा होता है तथा महीन कणों से बने होने के कारण इसमें जल को रोके रखने की क्षमता होती है। इस मिट्टी को बलुआ दोमट या मटियार आदि नामों से भी जाना जाता है।
- ◆ **बांगर मृदा (प्राचीन जलोढ़ मिट्टी):** गंगा तथा यमुना के मैदानी क्षेत्रों का वह भू-भाग जहाँ पर इन नदियों की बाढ़ का पानी नहीं पहुँच पाता है, उन क्षेत्रों की मृदा को बांगर या प्राचीन जलोढ़ मिट्टी कहते हैं। इस मृदा को दोमट, मटियार दोमट या मटियार बलुई दोमट भी कहते हैं।

नोट: सामान्यतः सघन कृषि के कारण इस मिट्टी में नाइट्रोजन, फॉस्फोरस तथा पोटेशियम की कमी पाई जाती है।

- ◆ **भूड़ मृदा:** यह मिट्टी हल्की दोमट एवं बलुई होती है। गंगा-यमुना तथा उनकी सहायक नदियों के बाढ़ वाले क्षेत्रों में बहुत लम्बे समय से बने हुए 15-20 फीट ऊँचे टीलों को ही भूड़ कहा जाता है। इस मिट्टी के कण बड़े व खुदरे होते हैं। यह मुरादाबाद तथा संभल क्षेत्र में अधिक पाई जाती है।

नोट: उत्तर प्रदेश में सर्वाधिक जलोढ़ मिट्टी पाई जाती है।

- ◆ **काली मृदा (रेगुर):** काली मिट्टी को रेगुर या काली कपास मिट्टी के नाम से भी जाना जाता है। यह मिट्टी अधिक नमी धारण कर सकती है। रेगुर प्रदेश के पश्चिमी क्षेत्र तथा बुंदेलखण्ड क्षेत्र में पाई जाती है।
- ◆ **लवणीय तथा क्षारिय मृदाएं (रेह या बंजर या कल्लर):** लवणीय मिट्टी का pH मान 7 से 8.5 के मध्य तथा क्षारिय मिट्टी का pH मान 8.5 से अधिक होता है। उपजाऊ मिट्टी का आदर्श pH मान 5.5 से 7.0 होना चाहिए। उर्वरकों के अत्यधिक प्रयोग, जल निकासी का उचित प्रबंध न होना तथा नदी नालों के रसायन युक्त पानी से अत्यधिक सिंचाई इसके प्रमुख कारण हैं। उत्तर प्रदेश के अलीगढ़, कानपुर, एटा, इटावा, मैनपुरी, जौनपुर, प्रतापगढ़ तथा प्रयागराज आदि जिलों में ऐसी समतल एवं बंजर भूमि पाई जाती है।
- ◆ **मरुस्थलीय मृदा :** यह मृदा वर्षा की कमी, शुष्कता तथा अधिक तापमान वाले क्षेत्रों में पाई जाती है जैसे- प्रदेश के मथुरा, आगरा और अलीगढ़ जिले। इस मिट्टी में बालू के कण मोटे व अधिक मात्रा में होने के कारण इस मिट्टी में नमी को रोके रखने की क्षमता बहुत कम होती है। यद्यपि इस मिट्टी में नाइट्रोजन व जीवाश्म की कमी होती है, फिर भी मोटे अनाज जैसे- बाजरा, ज्वार, दालें

(मूंग व उड़द आदि) की खेती इस प्रकार की मिट्टी में की जा सकती है।

दक्षिण के पठारी क्षेत्र की मृदाएं:

- ◆ यह मृदाएं प्रदेश के बुंदेलखण्ड क्षेत्र में अधिक पाई जाती है। जिसमें झाँसी, बाँदा, ललितपुर, हमीरपुर, जालौन, महोबा तथा चित्रकूट शामिल हैं। इसलिए इसे क्षेत्रीय भाषा में बुंदेलखण्डी मृदा भी कहते हैं। इसके अलावा यह मृदा सोनभद्र एवं मिर्जापुर के कुछ क्षेत्रों में भी पाई जाती है। बुंदेलखण्डी मृदाओं को भोंटा, माड़, पड़वा, राकड़ तथा लाल मिट्टी आदि नामों से भी जाना जाता है। क्योंकि विभिन्न भौतिक व रासायनिक परिवर्तनों के कारण इन मिट्टियों में थोड़ी-थोड़ी भिन्नता पाई जाती है।
- ◆ **भोंटा मृदा:** यह विन्ध्य पर्वतीय क्षेत्र में पाई जाती है। इसमें मोटे अनाज वाली फसलें उगाई जा सकती हैं। यह मिट्टी हल्के लाल रंग की होती है।
- ◆ **माड़ मृदा:** यह मिट्टी उत्तर प्रदेश के पश्चिमी सीमा के जिलों में पाई जाती है। यह मिट्टी काली मिट्टी (रेगुर) के समान चिकनी होती है। इस मृदा में सिलिकेट की अधिकता होती है तथा पानी की अधिकता में यह मृदा, कीचड़ जैसी हो जाती है। इसलिए इस मृदा में कृषि करना दुर्लभ है।
- ◆ **पड़वा मृदा:** यह हल्के लाल रंग की मिट्टी होती है जोकि हमीरपुर, जालौन तथा यमुना के तटीय क्षेत्रों विशेषकर बीहड़ों में पाई जाती है।
- ◆ **राकड़ मृदा:** उत्तर प्रदेश के दक्षिण पर्वतीय एवं पठारी ढलानों पर यह मृदा अधिक पाई जाती है। यह लाल-भूरे रंग की दानेदार मृदा होती है। इस मृदा में खरीफ में तिल और रबी में चना उगाया जा सकता है।
- ◆ **लाल मृदा:** लाल मृदा प्रदेश के झाँसी, मिर्जापुर, चन्दौली तथा सोनभद्र जिलों में पाई जाती है। इस मृदा में दलहन और तिलहन की फसलें उगाई जा सकती हैं।

कृषि

- उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था में कृषि को मेरूदंड माना जाता है। गत वर्ष की आर्थिक समीक्षा के अनुसार प्रदेश का गेहूँ तथा खाद्यान्न उत्पादन में देश में प्रथम स्थान है, साथ ही भारत का सबसे बड़ा गन्ना एवं आलू उत्पादक राज्य भी उत्तर प्रदेश ही है।
- वर्ष 2014-2015 के कृषि जनगणना आंकड़ों के अनुसार प्रदेश में लगभग 165.98 लाख हेक्टेयर (68.7%) क्षेत्र में खेती की जाती है। प्रदेश में कृषि योग्य भूमि के 88% भाग पर खाद्यान्न बोए जाते हैं, जिससे देश के खाद्यान्न उत्पादन में प्रदेश का योगदान लगभग 18% है।
- वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार उत्तर प्रदेश की कुल

कार्यशील जनसंख्या के 59.3% लोग कृषि और सम्बंधित क्षेत्र में कार्यरत हैं।

- उत्तर प्रदेश भौगोलिक विस्तार की दृष्टि से चौथा सबसे बड़ा राज्य है, जिसका क्षेत्रफल 2,40,928 वर्ग किमी. है जो देश के कुल क्षेत्रफल का लगभग 7.3% है। प्रदेश में 4 पारिस्थितिक क्षेत्र हैं, जो तराई गंगा के मैदान, भाबर और विंध्य क्षेत्र को आच्छादित करते हैं।

वर्षा, भू-भाग और मृदा की विशेषताओं के आधार पर प्रदेश को नौ विभिन्न कृषि जलवायु क्षेत्रों में बाँटा जा सकता है-

- ◆ भाबर-तराई क्षेत्र
- ◆ पश्चिमी मैदान
- ◆ मध्य-पश्चिमी मैदान
- ◆ दक्षिणी-पश्चिमी मैदान
- ◆ मध्य मैदान
- ◆ बुन्देलखण्ड प्रदेश
- ◆ उत्तरी-पूर्वी मैदान
- ◆ पूर्वी मैदान
- ◆ विंध्य प्रदेश

- **प्रदेश में फसल चक्र:** उत्तर प्रदेश में रबी, खरीफ तथा जायद तीन ही प्रकार की फसलों का उत्पादन किया जाता है।

- ◆ **रबी की फसल:** यह फसल शीत ऋतु के आरम्भ अक्टूबर-नवम्बर में बोई जाती है और मार्च-अप्रैल में काटी जाती है। इन फसलों को औसत तापमान तथा कम सिंचाई की आवश्यकता होती है।

- **रबी की प्रमुख फसलें:** गेहूँ, चना, जौ, मटर, मसूर, सरसों अलसी, तंबाकू, आलू आदि हैं।

- ◆ **खरीफ की फसल:** यह फसल मई-जून-जुलाई में बोई जाती है और सितंबर-अक्टूबर में काटी जाती है। इन फसलों को अधिक तापमान तथा अधिक सिंचाई की आवश्यकता होती है।

- **खरीफ की प्रमुख फसलें:** ज्वार, बाजरा, मक्का, धान, सन, कपास, मूंगफली, गन्ना, मूंग, उड़द, तुअर, सोयाबीन आदि हैं।

- ◆ **जायद की फसल:** यह फसल मार्च-अप्रैल में बोई जाती है और जून-जुलाई तक तैयार हो जाती है। जायद की फसल को गर्मी की फसल भी कहा जाता है।

- **जायद की प्रमुख फसलें:** फल, फूल, सब्जियाँ जैसे- तरबूज, खरबूज, ककड़ी, लोबिया, लौकी, खीरा, भिण्डी आदि।

उत्तर प्रदेश की प्रमुख फसलें तथा उनसे संबंधित तथ्य:

गन्ना:

- गन्ना उत्पादन में प्रदेश का स्थान पूरे देश में प्रथम है। गन्ना प्रदेश की सर्वाधिक महत्वपूर्ण नकदी फसल है।

प्रदेश में गन्ना उत्पादक क्षेत्र:

- **तराई क्षेत्र:** गोरखपुर, लखीमपुर खीरी, सीतापुर, बलिया, बस्ती, गोंडा, देवरिया, महाराजगंज, रामपुर, बरेली तथा पीलीभीत आदि।
- **गंगा यमुना दोआब क्षेत्र:** मेरठ, मुजफ्फरनगर, शामली, बागपत, सहारनपुर, बुलंदशहर, अलीगढ़, बिजनौर, गाजियाबाद, मुरादाबाद आदि।
- भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ में स्थित है। इस संस्थान की स्थापना ICAR के दिशा-निर्देशन में 1952 में हुई थी।

गेहूँ:

- उत्तर प्रदेश देश का सर्वाधिक गेहूँ उत्पादक राज्य है। प्रदेश की कुल कृषि योग्य भूमि के लगभग 24% भू-भाग पर गेहूँ की खेती की जाती है, जिससे देश में गेहूँ उत्पादन में प्रदेश का योगदान लगभग 28.75% है। प्रदेश में गेहूँ उत्पादक प्रमुख जिले: गोरखपुर, सहारनपुर, मेरठ, आगरा, अलीगढ़, इटावा, कानपुर, मुरादाबाद, मुजफ्फरनगर, अलीगढ़, वाराणसी, बुलंदशहर आदि हैं। इनमें गोरखपुर अग्रणी है। प्रदेश के दक्षिणी पठारी क्षेत्र में गेहूँ की खेती नहीं की जाती है।

आलू:

- आलू उत्पादन में उत्तर प्रदेश का देश में प्रथम स्थान है। आलू रबी की फसल है। प्रदेश में आलू उत्पादक प्रमुख जिले: आगरा, अलीगढ़, हाथरस, कासगंज, कन्नौज, फिरोजाबाद, फर्रुखाबाद, इटावा, मथुरा आदि हैं। उत्तर प्रदेश देश का लगभग 31% आलू का उत्पादन करता है। केन्द्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, मोदीपुरम (मेरठ) में स्थित है। आलू उत्कृष्टता केन्द्र, बाबूगढ़ (हापुड़) में स्थित है।

धान:

- चावल उत्पादन हेतु प्रदेश में कृषि योग्य भूमि के लगभग 18% भू-भाग पर धान की खेती की जाती है। देश के कुल धान उत्पादन का लगभग 12% उत्पादन उत्तर प्रदेश में होता है। प्रदेश के प्रमुख धान उत्पादक जिले: महाराजगंज, देवरिया, सिद्धार्थनगर, गोंडा, बहराइच, गोरखपुर, लखीमपुर खीरी, लखनऊ, वाराणसी, पीलीभीत, बस्ती, मऊ, बलरामपुर, प्रयागराज आदि हैं।

चना:

- चने की खेती प्रदेश के हल्की दोमट एवं शुष्क जलवायु वाले क्षेत्रों में की जाती है। प्रदेश का बुंदेलखण्ड क्षेत्र सर्वाधिक चना उत्पादक क्षेत्र है। प्रदेश के चना उत्पादक प्रमुख जिले: प्रयागराज, चित्रकूट, कानपुर, ललितपुर, बाँदा, झाँसी, मिर्जापुर, सोनभद्र, महोबा, फतेहपुर, हमीरपुर, बाराबंकी, सीतापुर आदि।

अफीम:

- उत्तर प्रदेश में अफीम का उत्पादन गाजीपुर तथा बाराबंकी में होता है। उत्तर प्रदेश की एकमात्र अफीम फैक्ट्री गाजीपुर में स्थित है। बाराबंकी अफीम का सबसे बड़ा उत्पादक जिला है।

बाजरा:

- बाजरा पानी की कमी और सूखे की स्थिति के लिए सबसे उपयुक्त है। बाजार उत्पादन में देश में उत्तर प्रदेश शीर्ष चार राज्यों में से एक है। बाजरे का सर्वाधिक उत्पादन आगरा जिले में होता है। प्रदेश में बाजरा उत्पादक प्रमुख जिले: आगरा, मथुरा, अलीगढ़, हाथरस, कानपुर, एटा, इटावा, बदायूँ, मैनपुरी, फिरोजाबाद, औरैया, प्रतापगढ़ आदि है।

मक्का:

- उत्तर प्रदेश में मक्का मुख्य रूप से मई-जून में उगाई जाती है तथा अगस्त-सितम्बर में काटी जाती है। इसकी खेती रबी, खरीफ तथा जायद तीनों मौसम में की जा सकती है।
- प्रदेश में उगाई जाने वाली मक्का की प्रमुख प्रजातियाँ गंगा-11, सरताज, प्रभात, नवजोत, पूसा कम्पोजिट-2 आदि है। मक्का उत्पादन में प्रदेश का देश में तृतीय स्थान है। प्रदेश में मक्का उत्पादक प्रमुख जिले: मेरठ, बुलंदशहर, गाजियाबाद, फर्रुखाबाद, मैनपुरी, एटा, फिरोजाबाद, बहराइच आदि है।

अरहर:

- अरहर की फसल के लिए बलुई दोमट भूमि अच्छी होती है। अरहर के उत्पादन में उत्तर प्रदेश का स्थान देश में प्रथम है। अरहर खरीफ की फसल है। अरहर को रबी के मौसम में भी उगाया जा सकता है। प्रदेश में अरहर उत्पादक प्रमुख जिले: फतेहपुर, ललितपुर, वाराणसी, झाँसी, लखनऊ, महोबा तथा प्रयागराज आदि है।

सरसों:

- उत्तर प्रदेश, भारत का प्रथम सरसों उत्पादक राज्य है। उत्तर प्रदेश में सामान्यतः सभी क्षेत्रों में सरसों की खेती की जाती है परन्तु मध्य-पश्चिमी क्षेत्र में विशेष तौर पर सरसों की खेती की जाती है। सरसों की खेती स्वतंत्र रूप या मिश्रित रूप से गेहूँ, मटर, जौ आदि के साथ रबी के मौसम में की जाती है।

कपास:

- कपास की फसल जून-जुलाई में उगाई जाती है तथा अक्टूबर-नवम्बर तक तैयार हो जाती है। कपास प्रमुख नकदी फसलों में से एक है। कपास की खेती के लिए काली मिट्टी सबसे उपयुक्त होती है। इसे चिकनी/दोमट मिट्टी पर भी उगाया जा सकता है। उत्तर प्रदेश में छोटे रेशों वाली कपास का उत्पादन अधिक होता है। प्रदेश में कपास उत्पादक प्रमुख जिले : सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, गाजियाबाद, मेरठ, आगरा, अलीगढ़, मथुरा, हाथरस, बुलंदशहर, इटावा, कानपुर, बरेली, मुरादाबाद, रामपुर तथा मैनपुरी आदि है।

जूट:

- जूट की फसल जून-जुलाई में उगाई जाती है तथा सितंबर-अक्टूबर में तैयार हो जाती है। जूट के प्रमुख उत्पादक क्षेत्र- सरयू एवं

घाघरा के दोआब है। प्रदेश के प्रमुख जूट उत्पादक जिले मेरठ, बुलंदशहर, वाराणसी, मैनपुरी, सहारनपुर तथा फर्रुखाबाद आदि है।

- उत्तर प्रदेश में सबसे अधिक आँवला उत्पादन (लगभग 60%) प्रतापगढ़ में होता है।
- प्रदेश में लीची का अधिकांश उत्पादन सहारनपुर तथा मेरठ में होता है।
- प्रदेश के फिरोजाबाद जिले में जौ का सर्वाधिक उत्पादन होता है।
- प्रदेश में महोबा पान की खेती के लिए प्रसिद्ध है। पान अनुसंधान व प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना महोबा में की गई है। प्रदेश में पान उत्पादक प्रमुख जिले: बाँदा, ललितपुर, प्रतापगढ़, उन्नाव, रायबरेली, बलिया, कानपुर, लखनऊ, प्रयागराज, वाराणसी, सोनभद्र तथा आजमगढ़ आदि हैं।
- मूँगफली की खेती मुख्यतः खरीफ फसल के अंतर्गत की जाती है। इसकी बुआई जून-जुलाई में की जाती है तथा नवम्बर-दिसम्बर में फसल तैयार हो जाती है। मूँगफली की खेती के लिए बलुई मिट्टी उपयुक्त होती है। प्रदेश में मूँगफली उत्पादक प्रमुख जिले: सीतापुर, हरदोई, मैनपुरी, एटा तथा बदायूँ आदि है।
- दशहरी आम के उत्पादन में उत्तर प्रदेश अग्रणी है। प्रदेश में दशहरी आम का उत्पादन सर्वाधिक मलीहाबाद क्षेत्र (लखनऊ) में होता है। उत्तर प्रदेश के मलीहाबादी दशहरी आम, सहारनपुर का सफेदा व चौसा आम, मेरठ व बागपत का रटौल आम, वाराणसी की लंगड़ा आम आदि प्रमुख आम की किस्में हैं।
- केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान (पुराना नाम: केन्द्रीय आम अनुसंधान संस्थान) लखनऊ में स्थित है।
- उत्तर प्रदेश में सहारनपुर तथा मेरठ जिलों में नींबू प्रधानतः उगाया जाता है। इसके अतिरिक्त बुंदेलखण्ड क्षेत्र में भी नींबू का उत्पादन किया जाता है।
- माल्टा का उत्पादन प्रदेश में मुख्य रूप से सहारनपुर, मेरठ तथा वाराणसी में किया जाता है।
- अमरूद का उत्पादन मुख्यतः** प्रयागराज, कौशांबी, कानपुर, बदायूँ, बरेली, अयोध्या आदि जिले में किया जाता है। अमरूद की प्रमुख निर्यातक प्रजातियाँ इलाहाबादी सफेद, लखनऊ-49 (सरदार) तथा ललित सुर्खा है।
- 1974 में प्रदेश में उद्यान एवं प्रसंस्करण विभाग की स्थापना की गई थी।
- प्रदेश के 3 कृषि निर्यात क्षेत्र लखनऊ (आम), सहारनपुर (आम) तथा आगरा (आलू) हैं।

3 अध्याय

उत्तर प्रदेश: वन, वनस्पति एवं वन्य जीव

भारत की प्रथम वन नीति 1952 में अपनायी गयी इसके पश्चात् वर्ष 1988 में इसे संशोधित कर द्वितीय वन नीति अपनायी गयी। राष्ट्रीय वन नीति 1988 के अनुसार देश का 33% भू-भाग वनाच्छादित होना चाहिए।

इंडिया स्टेट ऑफ फॉरेस्ट रिपोर्ट-2021 (ISFR-2021):

- भारतीय वन सर्वेक्षण 2021 द्वारा जारी इंडिया स्टेट ऑफ फॉरेस्ट रिपोर्ट (ISFR-2021) के अनुसार उत्तर प्रदेश के वन क्षेत्र का भौगोलिक क्षेत्र के सापेक्ष प्रतिशत 7.35% (या 17707.51 वर्ग किमी., कुल 2,40,928 वर्ग किमी. में से) है, तथा उत्तर प्रदेश का कुल वनाच्छादित क्षेत्र प्रदेश के कुल भौगोलिक क्षेत्र का 6.15% (या 14,818 वर्ग किमी., कुल 2,40,928 वर्ग किमी. में से) है।
- भारत का कुल वन क्षेत्र 21.71% (या 7,13,789 वर्ग किमी. कुल 32,87,469 वर्ग किमी. में से) है, तथा कुल वनाच्छादित क्षेत्र 21.67% (या 7,12,256 वर्ग किमी.; 32,87,469 वर्ग किमी. में से) है।
- 17 राज्यों/केन्द्र शासित प्रदेशों का 33% से अधिक भौगोलिक क्षेत्र वनाच्छादित है। इनमें से पांच राज्यों/केन्द्र शासित प्रदेशों में से 5 राज्यों/केन्द्र शासित प्रदेशों में 75% से अधिक वन क्षेत्र हैं। सबसे अधिक वनावरण वाला केन्द्र शासित प्रदेश (% क्षेत्रफल की दृष्टि से) लक्षद्वीप और राज्य मिजोरम तथा सबसे कम वनावरण वाला राज्य हरियाणा है।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से सर्वाधिक वनावरण मध्य प्रदेश में 7748 वर्ग किमी. है।
- भारत में वन क्षेत्र से भूमि क्षेत्र के प्रतिशत में अधिकतम बढ़ोत्तरी के मामले में शीर्ष राज्य निम्न है:
 - ◆ आंध्र प्रदेश (647 वर्ग किमी.)
 - ◆ तेलंगाना (632 वर्ग किमी.)
 - ◆ ओडिशा (537 वर्ग किमी.)

रिपोर्ट के अनुसार उत्तर प्रदेश में:

- ◆ आरक्षित वन क्षेत्र - 68.74% (12116 वर्ग किमी.)
- ◆ संरक्षित वन क्षेत्र - 2.02% (356 वर्ग किमी.)
- ◆ अवर्गीकृत एवं निहित वन क्षेत्र - 29.24% (5155 वर्ग किमी.)

इंडिया स्टेट ऑफ फॉरेस्ट रिपोर्ट-2019 (ISFR-2019):

- भारतीय वन सर्वेक्षण 2019 द्वारा जारी इंडिया स्टेट ऑफ फॉरेस्ट रिपोर्ट (ISFR-2019) के अनुसार उत्तर प्रदेश का कुल वन क्षेत्र (16582 वर्ग किमी.) उसके भौगोलिक क्षेत्रफल का 6.88% हैं।
- इंडिया स्टेट ऑफ फॉरेस्ट रिपोर्ट 2019 (ISFR-2019) के अनुसार उत्तर प्रदेश का कुल वनावरण भाग (14805.65 वर्ग किमी.) उसके कुल क्षेत्रफल का 6.25% है।

रिपोर्ट के अनुसार उत्तर प्रदेश में:

- ◆ आरक्षित वन क्षेत्र - 72.79%
- ◆ संरक्षित वन क्षेत्र - 6.98%
- ◆ अवर्गीकृत वन क्षेत्र - 20.23%

- अति सघन वन: 1.09% (2616.43 वर्ग किमी.)
- मध्यम सघन वन: 1.69% (4080.04 वर्ग किमी.)
- खुले वन: 3.37% (8109.18 वर्ग किमी.)

परीक्षोपयोगी तथ्य

- अधिकतम वनावरण वाला जिला - सोनभद्र है।
- न्यूनतम वनावरण वाला जिला - भदोही है।
- प्रदेश में सबसे अधिक वन भाबर तथा तराई क्षेत्रों में मिलते हैं।
- सबसे अधिक अति सघन वन क्षेत्र - लखीमपुर खीरी में पाये जाते हैं।
- मध्यम वन क्षेत्र एवं खुला वन क्षेत्र - सोनभद्र में पाया जाता है।

उत्तर प्रदेश के वनों को मुख्य रूप से निम्न तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है-

- ◆ उष्णकटिबंधीय नम (आर्द्र) पर्णपाती वन
- ◆ उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वन
- ◆ उष्णकटिबंधीय काटेदार वन

- नम (आर्द्र) पर्णपाती वन भाबर तथा तराई क्षेत्रों में पाये जाते हैं। आर्द्र पर्णपाती वनों में बांस, बेंत, जामुन, आंवला, महुआ, सेमल, बेर, पलाश, गूलर, इमली आदि के वृक्ष मिलते हैं।
- शुष्क पर्णपाती वन प्रदेश के पूर्व, मध्य एवं पश्चिमी मैदानों में मिलते हैं। इन वनों में पीपल, नीम, बेल, अंजीर, अमलतास आदि के वृक्ष मिलते हैं।

- प्रदेश के दक्षिणी भाग में जहां पर औसत वार्षिक वर्षा 50-75 सेमी. होती है वहां कंटीली झाड़ियों वाले वन मिलते हैं। इनमें अकेसिया, कत्था, धामन, यूफोर्बिया, नीम आदि के वृक्ष मिलते हैं।

वनों से प्राप्त उत्पाद

- बेंत, यूकेलिप्टस एवं बांस के वृक्षों से प्राप्त कच्चे माल द्वारा कागज बनाया जाता है।
- तेंदू वृक्ष के पत्तों द्वारा बीड़ियाँ बनाई जाती हैं।
- सिंदूर, देवदार, कैल तथा साइपरस की लकड़ी से पेंसिल बनाई जाती है।
- साखू तथा महुए के पत्तों से पत्तल व दोने बनाए जाते हैं।
- पॉपलर वृक्षों की लकड़ी दिया-सलाई और प्लाई के निर्माण में प्रयोग की जाती है। इसके अलावा तनु, बहेड़ा तथा सागौन की लकड़ी से भी प्लाई वुड का निर्माण किया जाता है।
- बबूल की छाल से प्राप्त रंगों से चमड़े की रंगाई की जाती है।
- खैर वृक्ष के रस से कत्था बनाया जाता है।
- रबड़ वृक्ष के रस से रबड़ तथा ताड़ एवं खजूर के रस से ताड़ी प्राप्त की जाती है।
- चीड़ के पेड़ से निकलने वाले तरल से विरोजा तथा तारपीन का तेल प्राप्त होता है।
- चीड़, देवदार, सागौन, साल के वृक्षों का उपयोग इमारती लकड़ी के रूप में किया जाता है।

उत्तर प्रदेश में वनों पर आधारित प्रमुख उद्योग निम्न हैं:

- खेल के सामान के उत्पादन का प्रमुख केंद्र - मेरठ
- लकड़ी के खिलौने - सोनभद्र, वाराणसी
- कागज उत्पादन का प्रमुख केंद्र - सहारनपुर
- चीनी मिट्टी के खिलौने तथा बीड़ी - मिर्जापुर, झांसी, सहारनपुर, बरेली
- माचिस, फर्नीचर, कत्था, बेंत, प्लाईवुड - बरेली, नजीबाबाद, नगीना
- रेशम उत्पादन के प्रमुख केंद्र - सहारनपुर (शहतूती रेशम), सोनभद्र (टसर रेशम), चित्रकूट (एरी रेशम)
- सामाजिक वानिकी योजना, राष्ट्रीय कृषि आयोग के प्रयासों से उत्तर प्रदेश में 1976 में आरम्भ हुई। इसका प्रमुख उद्देश्य सामाजिक प्रयासों से वृक्षारोपण में वृद्धि करना था।
- उत्तर प्रदेश में उत्तर प्रदेश वानिकी परियोजना विश्व बैंक की सहायता से 19 मार्च 1998 में शुरू की गई।
- ऑपरेशन ग्रीन योजना 1 जुलाई 2001 से वृक्षारोपण द्वारा उत्तर प्रदेश के वनावरण में वृद्धि के लिए शुरू की गई थी।

- वानिकी प्रशिक्षण संस्थान, 1988 में किदवई नगर, कानपुर (उत्तर प्रदेश) में स्थापित किया गया था।

वृक्ष बंधु पुरस्कार योजना

- वृक्षारोपण तथा जीवों के संरक्षण हेतु वृक्ष बंधु पुरस्कार योजना 2007-08 से चलाई गयी, इस योजना के अंतर्गत वृक्षारोपण और वन्यजीव संरक्षण को बढ़ावा देने वाले व्यक्ति या संस्था को पुरस्कृत किया जाता है।

वीर अब्दुल हमीद वन, वन्य जीव एवं पर्यावरण संरक्षण पुरस्कार योजना

- वृक्षारोपण बढ़ाने, वन्य जीवों तथा पर्यावरण संरक्षण हेतु प्रशंसनीय कार्य करने वाले व्यक्ति/संगठन को पुरस्कृत करने के उद्देश्य से वर्ष 2012-13 से योजना प्रारम्भ की गई है, जिससे समाज में वन एवं वन्य जीवों के संरक्षण की भावना जागृत होगी।
- वृक्षारोपण अभियान 2023 में प्रदेश का पौधारोपण लक्ष्य 35 करोड़ है।
- इस अभियान में पेड़ लगाओ, पेड़ बचाओ, हर खेत पर मेड़ पर पेड़, पेड़ रहेगा तो जीवन रहेगा आदि स्लोगन के माध्यम से जन मानस को जोड़ा जा रहा है।
- समस्त विभागों एवं स्वयं सेवी संस्थाओं तथा जन प्रतिनिधियों के सहयोग से वृहद् स्तर पर वृक्षारोपण अभियान के अंतर्गत दिनांक 22.07.2023 को एक ही दिन 30 करोड़ पौधों का रोपण।
- 15 अगस्त 2023 स्वतंत्रता दिवस के शुभ अवसर पर 5 करोड़ पौधों का रोपण।

वन्य जीव विहार/पक्षी विहार

- 1935 में देश का प्रथम वन्य जीव विहार तत्कालीन उत्तर प्रदेश लेकिन वर्तमान उत्तराखंड में 'मोतीचूर वन्य जीव विहार' (राजाजी राष्ट्रीय उद्यान) के रूप में स्थापित किया गया।
- 1936 में एशिया का पहला राष्ट्रीय उद्यान 'हेली राष्ट्रीय उद्यान' (जिम कॉर्बेट नेशनल पार्क) की स्थापना उत्तराखंड (तत्कालीन उत्तर प्रदेश) में की गई।
- 'दुधवा राष्ट्रीय उद्यान' (490 वर्ग किमी.) प्रदेश का एकमात्र राष्ट्रीय उद्यान है। यह पीलीभीत तथा लखीमपुर खीरी जिलों में विस्तृत है। इसकी स्थापना 1968 में दुधवा पशु विहार के रूप में हुई थी। किंतु 1977 में इसे राष्ट्रीय उद्यान का दर्जा प्रदान किया गया। दुधवा राष्ट्रीय उद्यान में बारहसिंगा, हाथी, एक सींगी गैंडा, बाघ, अजगर तथा सांभर आदि जंतु पाए जाते हैं।
- 1957 में प्रदेश के प्रथम वन्य जीव विहार की स्थापना चंदौली में स्थित 'चंद्रप्रभा वन्य जीव विहार' के रूप में की गई।
- राज्य का सबसे बड़ा वन्य जीव विहार 'हस्तिनापुर वन्य जीव विहार' है।
- राज्य का सबसे छोटा वन्य जीव विहार 'महावीर स्वामी वन्य जीव अभयारण्य' (ललितपुर) है।

- ❑ देश का प्रथम पक्षी विहार 'चंद्रशेखर आजाद पक्षी अभयारण्य' (नवाबगंज, उन्नाव) है।
- ❑ प्रदेश का सबसे बड़ा पक्षी विहार 'लाख बहोशी पक्षी अभयारण्य' (कन्नौज) है।
- ❑ प्रदेश का सबसे छोटा पक्षी विहार 'पटना पक्षी विहार' (एटा) है।

उत्तर प्रदेश में टाइगर रिजर्व

- ❑ 1987 में दुधवा राष्ट्रीय उद्यान (उत्तर प्रदेश का एकलौता राष्ट्रीय उद्यान) को बाघ परियोजना (टाइगर रिजर्व) में शामिल किया गया। बाद में कतरनियाघाट वन्य जीव विहार तथा किशनपुर वन्य जीव विहार को भी इसी टाइगर रिजर्व के अंतर्गत लाया गया।
- ❑ 2012 में अमनगढ़ क्षेत्र (बिजनौर) को जिम कॉर्बेट टाइगर रिजर्व (उत्तराखंड) के बफर क्षेत्र के रूप में सम्मिलित किया गया। यह प्रदेश का दूसरा टाइगर रिजर्व है।
- ❑ 2014 में पीलीभीत-शाहजहांपुर के लगभग 730 वर्ग किमी. क्षेत्र को टाइगर रिजर्व का दर्जा दिया गया।
- ❑ 2022 में रानीपुर टाइगर रिजर्व उत्तर प्रदेश का चौथा एवं भारत का 53वां टाइगर रिजर्व बना है।

उत्तर प्रदेश के पक्षी विहार

पक्षी विहार	संबंधित जिले (स्थापना वर्ष)
नवाबगंज (शहीद चंद्रशेखर आजाद) पक्षी विहार (सबसे पुराना)	उन्नाव (1984)
समसपुर पक्षी विहार	रायबरेली (1987)
लाख बहोशी पक्षी विहार (सबसे बड़ा, 80.24 वर्ग किमी.)	कन्नौज (1988)
बखीरा पक्षी विहार	संत कबीर नगर (1990)
सांडी पक्षी विहार	हरदोई (1990)
समान पक्षी विहार	मैनपुरी (1990)
पटना पक्षी विहार (सबसे छोटा, 1.09 वर्ग किमी.)	एटा (1990)
पार्वती अरंगा पक्षी विहार	गोंडा (1990)
ओखला पक्षी विहार	गौतमबुद्ध नगर (1990)
विजय सागर पक्षी विहार	महोबा (1990)
सूर सरोवर पक्षी विहार	आगरा एवं इटावा (1991)

सुरहा ताल (लोकनायक जयप्रकाश नारायण) पक्षी विहार	बलिया (1991)
डॉ. भीमराव अंबेडकर पक्षी विहार	प्रतापगढ़ (2003)
शेखा पक्षी विहार (शेखा झील)	अलीगढ़ (2016)

उत्तर प्रदेश के वन्य जीव विहार

वन्य जीव विहार	संबंधित जिले (स्थापना वर्ष)	जीवों के नाम
चंद्रप्रभा वन्य जीव विहार	चंदौली (1957)	सांभर, तेंदुआ, चीतल, भालू
किशनपुर वन्य जीव विहार	लखीमपुर खीरी (1972)	बारहसिंगा, शेर, चीतल
कतरनियाघाट वन्य जीव विहार	बहराइच (1976)	नीलगाय, बाघ, तेंदुआ, चीतल
रानीपुर वन्य जीव विहार	बांदा (1977)	काला हिरण, स्लॉथ भालू, तेंदुआ, चिंकारा
महावीर स्वामी वन्य जीव विहार (सबसे छोटा, 5.4 वर्ग किमी.)	ललितपुर (1977)	जंगली भालू, नीलगाय, काला हिरण, चिंकारा
चंबल वन्य जीव विहार	आगरा, इटावा (1979)	घड़ियाल, डॉल्फिन भेड़िया, मगर
कैमूर वन्य जीव विहार	मिर्जापुर, सोनभद्र (1982)	मोर, भालू, तेंदुआ, चिंकारा
हस्तिनापुर वन्य जीव विहार (सबसे बड़ा, 2073 वर्ग किमी.)	मेरठ, मुजफ्फरनगर, बिजनौर, हापुड़, मुरादाबाद, अमरोहा, गाजियाबाद (1986)	लकड़बग्घा, बारहसिंगा, नीलगाय
सोहागी बरवा वन्य जीव विहार	महाराजगंज (1987)	अजगर, बाघ, तेंदुआ
सुहेलवा वन्य जीव विहार	गोंडा, श्रावस्ती, बलरामपुर (1988)	चीतल, शेर
कछुआ वन्य जीव विहार	वाराणसी (1989)	गंगा डॉल्फिन, कछुएँ की प्रजाति

उत्तर प्रदेश के प्रमुख वन्यजीव विहार एवं टाइगर रिजर्व



परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण प्रश्न

1. उत्तर प्रदेश वन निगम कब स्थापित किया गया?

UPSSSC Forest Guard 11/12/2015

- (a) 25 नवम्बर, 1974 (b) 25 नवम्बर, 1975
(c) 25 नवम्बर, 1976 (d) 25 नवम्बर, 1977

2. दुधवा राष्ट्रीय उद्यान प्रदेश के निम्न में से किस जिले में स्थित है?

UPSSSC Lower Exam 21/10/2021

- (a) लखीमपुर खीरी (b) इनमें से कोई नहीं
(c) गोरखपुर (d) इटावा

3. चन्द्रप्रभा मृगवन भारत के किस राज्य में स्थित है?

UPSSSC Forest Guard 11/12/2015

- (a) उत्तर प्रदेश (b) राजस्थान
(c) मध्य प्रदेश (d) गुजरात

4. लाख बहोशी अभयारण्य में स्थित है।

- (a) कन्नौज (b) ललितपुर
(c) आगरा (d) गोंडा

5. निम्नलिखित पक्षी अभयारण्यों में से कौन-सा उत्तर प्रदेश में स्थित नहीं है?

UPPSC ACF/RFO 2019

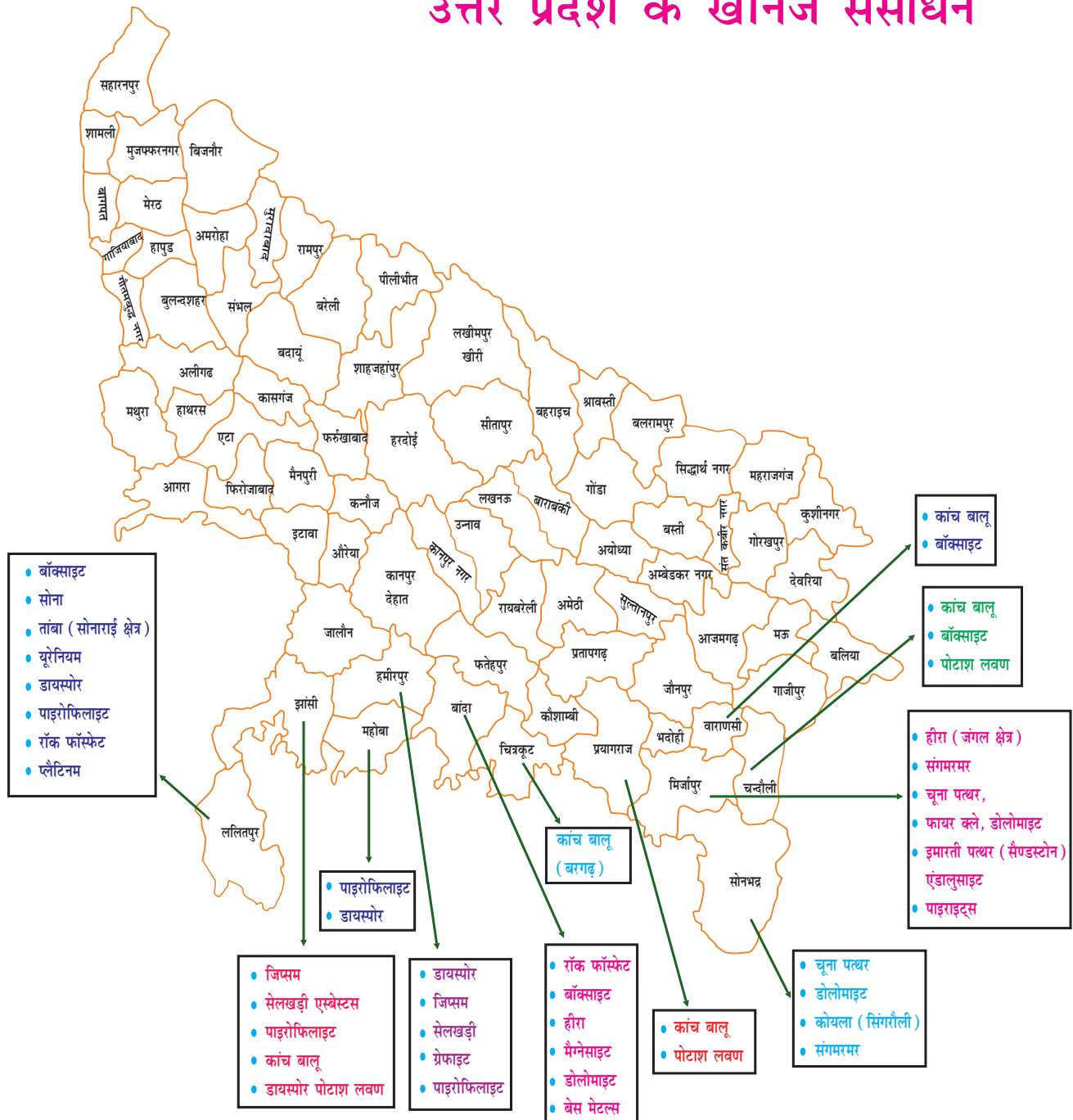
1. पटना पक्षी अभयारण्य
2. जयप्रकाश नारायण पक्षी अभयारण्य
3. चित्रांगुडी पक्षी अभयारण्य
4. उधवा पक्षी अभयारण्य

4

अध्याय

उत्तर प्रदेश: खनिज संसाधन

उत्तर प्रदेश के खनिज संसाधन



- ❑ उत्तर प्रदेश के विन्ध्य क्षेत्र की पर्वत श्रृंखला के मध्य विभिन्न प्रकार की खनिज सम्पदाओं का भण्डार है।
- ❑ प्रदेश में पाये जाने वाले प्रमुख खनिज चूना-पत्थर, डोलोमाइट, मैग्नेसाइट, बॉक्साइट, एंडालुसाइट, डायस्पोर, कोयला, यूरेनियम, सिलिका सैंड, गंधक व जिप्सम हैं।
- ❑ 1955 में भू-तत्व एवं खनिज कर्म निदेशालय की स्थापना प्रदेश में खनिज संपदा की खोज एवं उन पर आधारित उद्योगों के विकास के उद्देश्य से की गई थी।
- ❑ उत्तर प्रदेश राज्य खनिज विकास निगम की स्थापना वर्ष 1974 में की गई।

उत्तर प्रदेश खनिज नीति 1998:

- ❑ यह उत्तर प्रदेश राज्य की पहली खनिज नीति थी। इस नीति के अंतर्गत खनिज विकास को उद्योग का दर्जा दिया गया। इस नीति द्वारा प्रदेश के 10 जिलों- ललितपुर, जालौन, सोनभद्र, महोबा, हमीरपुर, बांदा, मिर्जापुर, झांसी, प्रयागराज तथा सहारनपुर को खनिज बाहुल्य क्षेत्र घोषित किया गया।

उत्तर प्रदेश खनन नीति 2017:

- ❑ इस नीति का मुख्य लक्ष्य आगामी पाँच वर्षों में राज्य की कुल राजस्व प्राप्ति में खनिजों से प्राप्त राजस्व को 1.85% से बढ़ाकर 3% तक करना है तथा खनिज क्षेत्र में रोजगार के अवसर को बढ़ावा देना है।
- ❑ भारत में होने वाले कुल खनिज उत्पादन में उत्तर प्रदेश का योगदान लगभग 4% है।
- ❑ बॉक्साइट, एल्यूमीनियम का अयस्क है। बॉक्साइट उत्तर प्रदेश के ललितपुर, वाराणसी, चंदौली, बांदा व चित्रकूट जिलों में पाया जाता है।
- ❑ पाइराइट्स प्रदेश के सोनभद्र और मिर्जापुर जिले में पाया जाता है।
- ❑ संगमरमर मिर्जापुर तथा सोनभद्र जिले में पाया जाता है।
- ❑ यूरेनियम ललितपुर जिले में पाया जाता है।
- ❑ डायस्पोर हमीरपुर, ललितपुर, झांसी, महोबा में पाया जाता है। इसके उत्पादन में प्रदेश का देश में प्रथम स्थान है।
- ❑ एंडालुसाइट सोनभद्र तथा मिर्जापुर में प्राप्त होता है। एंडालुसाइट के भंडारण की दृष्टि से प्रदेश का देश में प्रथम स्थान है।
- ❑ 30 प्र० में कोयले की प्राप्ति सिंगरौली क्षेत्र (सोनभद्र) से होती है।
- ❑ डोलोमाइट प्रदेश में सोनभद्र के कजराहट तथा बांदा जिले से प्राप्त होता है।
- ❑ डोलोमाइट का उपयोग इस्पात एवं लौह उद्योग में तथा पोर्टलैंड सीमेंट, प्लास्टर ऑफ पेरिस, गंधक का तेजाब आदि बनाने में भी होता है।
- ❑ मिर्जापुर के बांसी-मकरी-खोह क्षेत्र में फायर क्ले की भी मौजूदगी है।

पाइरोफिलाइट: यह खनिज प्रदेश के झांसी, ललितपुर, महोबा एवं हमीरपुर में पाया जाता है। इसका उपयोग कीटनाशकों के निर्माण तथा सिरैमिक उद्योग में किया जाता है।

चूना पत्थर: उत्तर प्रदेश के चूना पत्थर उत्पादक जिले मिर्जापुर एवं सोनभद्र हैं। चूना पत्थर के संचित भण्डार में उत्तर प्रदेश का दूसरा स्थान है। मिर्जापुर में चुनार, सोनभद्र में कजराहट तथा चुरक और डल्ला प्रमुख चूना पत्थर उत्पादक क्षेत्र हैं। चूना पत्थर का उपयोग मुख्यतः सीमेंट बनाने में किया जाता है।

काँच बालू: इसे सिलिका सैंड भी कहते हैं जो गंगा एवं यमुना नदियों से प्राप्त होती है। इससे काँच बनाया जाता है। प्रदेश के अंतर्गत प्रयागराज जनपद के शंकरगढ़ क्षेत्र से काँच बालू (सिलिका सैंड) की प्राप्ति होती है। इसके अतिरिक्त काँच बालू के भण्डार चंदौली के चकिया क्षेत्र, झांसी के बाला बहेट एवं मुंडरी क्षेत्र तथा चित्रकूट के बरगढ़, लौहगढ़, धनदौल क्षेत्र से प्राप्त किया जाता है।

❑ चाइना क्ले मिर्जापुर, बांदा, सोनभद्र में पाया जाता है।

जिप्सम: जिप्सम राज्य के झांसी तथा हमीरपुर जिलों में पाया है। इसका उपयोग मुख्यतः सीमेंट, गंधक तथा अमोनिया सल्फेट नामक रासायनिक पदार्थ के निर्माण में किया जाता है।

❑ तांबा आग्नेय तथा परतदार चट्टानों में पाया जाता है। यह प्रमुख रूप से ललितपुर के सोनराई क्षेत्र में पाया जाता है।

❑ एस्बेस्टस झांसी के बड़ागांव क्षेत्र तथा मिर्जापुर में प्राप्त होता है। इसका उपयोग सीमेंट तथा विद्युत उपकरणों के निर्माण में किया जाता है।

❑ हीरा-उत्तर प्रदेश में हीरा अल्प मात्रा में बांदा जिले में पाया जाता है।

खनिज	जिले
कोयला	सिंगरौली (सोनभद्र)
सिलिका सैंड (काँच बालू)	शंकरगढ़ (प्रयागराज), बांदा, चंदौली, झांसी, चित्रकूट
पाइराइट्स	सोनभद्र, मिर्जापुर
बॉक्साइट	चंदौली, बांदा, चित्रकूट, ललितपुर
चूना पत्थर	कजराहट (सोनभद्र), गुरुमा-कनाच-बाबूहारि (मिर्जापुर)
एंडालुसाइट	सोनभद्र, मिर्जापुर
फायर क्ले	सोनभद्र, बांसी-मकरी-खोह (मिर्जापुर)
पाइरोफिलाइट	महोबा, ललितपुर, झांसी, हमीरपुर
डोलोमाइट	चंदौली, बांदा, सोनभद्र, मिर्जापुर
रॉक फास्फेट	ललितपुर, बांदा
सेलखड़ी	झांसी, हमीरपुर
पोटाश लवण	चंदौली, बांदा, प्रयागराज, झांसी, सोनभद्र
फेल्सपार	झांसी